Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 12 नवंबर, 2021

एंटी-ओपन बर्नगि कैंपेन

दलि्ली सरकार ने हाल ही में प्रदेश में खुले में अपशष्टि जलाने और वायु प्रदूषण की घटनाओं पर अंकुश लगाने हेतु 11 नवंबर से 11 दसिंबर, 2021 तक दलि्ली में 'एंटी-ओपन बर्नगि कैंपेन' शुरू करने की घोषणा की। यह घोषणा दलि्ली में वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) के 'खतरनाक' स्तर पर पहुँचने के बाद की गई। ज्ञात हो कि बीते दनिों दीपावली के अवसर पर राजधानी में 'वायु गुणवत्ता सूचकांक' 503 के गंभीर स्तर पर पहुँच गया था। दलि्ली में वायु प्रदूषण के मुद्दे पर एक उच्च स्तरीय बैठक के बाद दलि्ली सरकार द्वारा इस अभयिान को शुरू करने का नर्णिय लयिा गया। इस अभयिान के हस्सि के रूप में दलि्ली सरकार के वभिन्नि वभिागों द्वारा ऐसे स्थानों की पहचान की जाएगी, जहाँ खुले में अपशष्टि जलाने संबंधी घटनाएँ होती हैं और साथ ही इन घटनाओं को रोकने का भी प्रयास कयिा जाएगा। दलि्ली सरकार ने अपने सभी वभिागों को एक वशिष्टि 'एंटी डस्ट सेल' बनाने का भी नर्दिेश दयिा है। साथ ही सरकार द्वारा 'ग्रीन दलि्ली एप' भी शुरू कयिा जाएगा, जो कि आम लोगों को खुले में अपशष्टि जलाने की कसिी भी घटना की रपिोर्ट करने की सुवधिा प्रदान करेगा, ताकि संबंधति टीम द्वारा तत्काल कार्रवाई की जा सके।

ग्लोबल ड्रग पॉलसिी इंडेक्स

'हार्म रडिक्शन कंसोर्टयिम' द्वारा हाल ही में जारी पहले 'ग्लोबल ड्रग पॉलसिी इंडेक्स' में नॉर्वे, न्यूज़ीलैंड, पुर्तगाल, ब्रटिेन और ऑस्ट्रेलयिा को मानवीय और स्वास्थ्य-संचालति दवा नीतयिों पर पाँच प्रमुख देशों के रूप में स्थान दयिा गया है। इस सूचकांक में पाँच सबसे कम रैंकगि वाले देश ब्राज़ील, युगांडा, इंडोनेशयिा, केन्या और मैक्सकिो हैं। भारत 30 देशों की सूची में 18वें स्थान पर है। यह सूचकांक ड्रग नीतयिों और उनके कार्यान्वयन का डेटा-संचालति वैश्वकि वशि्लेषण प्रदान करता है। यह दवा नीति के पाँच व्यापक आयामों में संचालति 75 संकेतकों से बना है, इन पाँच आयामों में शामलि हैं- आपराधकि न्याय, अत्यधकि प्रतकि्रयिाएँ, स्वास्थ्य एवं नुकसान में कमी, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नयिंत्रति दवाओं तक पहुँच एवं वकिास। यह 'हार्म रडिक्शन कंसोर्टयिम' संगठन की एक परयिोजना है, जसिमें सहयोगी के तौर पर कई अंतर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन शामलि हैं। सूचकांक में शीर्ष पर रहने के बावजूद नॉर्वे केवल 74/100 स्कोर ही प्राप्त कर सका और सभी 30 देशों एवं आयामों में औसत स्कोर केवल 48/100 रहा, जो कि स्पष्ट तौर पर अंतर्राष्ट्रीय ड्रग नीति की वफिलता को दर्शाता है।

जलवायु परविर्तन हेतु अमेरकिा-चीन समझौता

कार्बन डाइऑक्साइड के दुनयिा के दो सबसे बड़े उत्सर्जक चीन और संयुक्त राज्य अमेरकिा ने जलवायु परविर्तन से नपिटने हेतु सहयोग बढ़ाने के लयि एक समझौता कयिा है, जसिमें मीथेन उत्सर्जन को कम करना, जंगलों की रक्षा करना और कोयले का उपयोग चरणबद्ध तरीके से समाप्त करना शामलि है। ग्लासगो में आयोजति 'संयुक्त राष्ट्र जलवायु परविर्तन सम्मेलन' (COP26) के दौरान इस समझौते की घोषणा की गई। दो सबसे बड़े कार्बन-प्रदूषणकर्त्ताओं ने कहा कि यह समझौता वर्ष 2015 के पेरसि जलवायु समझौते के दशिा-नर्दिेशों का उपयोग करते हुए '2020 के दशक में उन्नत जलवायु कार्रवाई' पर ज़ोर देगा, जसिमें वर्ष 2025 में एक नया मज़बूत उत्सर्जन कटौती लक्ष्य भी शामलि है। यह समझौता डीकार्बोनाइज़ेशन में 'ठोस और व्यावहारकि' नयिमों के नर्मिाण का भी आह्वान करता है, साथ ही इसमें मीथेन उत्सर्जन को कम करना और वनों की कटाई का मुकाबला करना भी शामलि है। गौरतलब है कि वर्ष 2015 का समझौता सभी देशों को व्यापक उत्सर्जन कटौती के माध्यम से वैश्वकि तापमान वृद्धि को 1.5oC और 2oC के बीच सीमति करने की दशिा में काम करने हेतु प्रतबिद्ध करता है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/rapid-fire-current-affairs-12-november-2021